पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

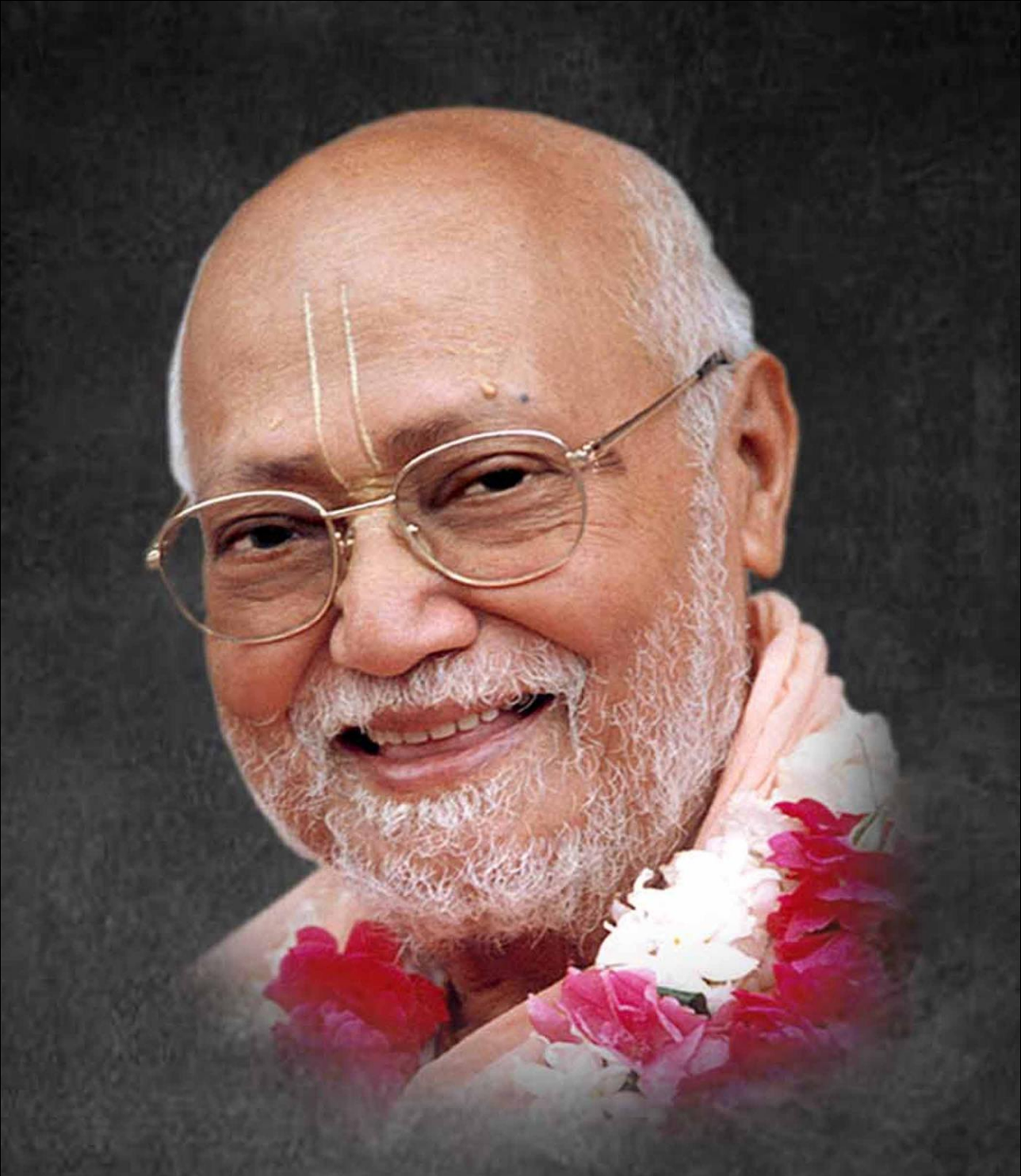

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

तृतीय खण्ड

भाग – 15

श्रीपुरुषोत्तम धाम में श्री श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती जी की 104 वीं आविर्भाव तिथि पूजा-महोत्सव व पाँच-दिवसीय धर्म-सम्मेलन

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

श्रील गुरुदेव जी की देखरेख में श्रीपुरुषोत्तम धाम में विश्वव्यापी श्रीचैतन्य मठ और श्रीगौड़ीय मठों के प्रतिष्ठाता नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108 श्री श्रीमद्भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद जी की शुभाविर्भावस्थली, टाऊन थाना के नज़दीक ही ग्रान्ड रोड स्थित श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर जी की एक-सौ-चारवीं शुभ-आविर्भाव तिथिपूजा और उसके

उपलक्ष्य में श्रीव्यासपूजा महासमारोह के रूप में सुसम्पन्न हुई। श्रील गुरुदेव जी के निमन्त्रण पर भारत के विभिन्न प्रान्तों से संन्यासी, वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी, गृहस्थ-भक्त और गृहस्थ- सज्जनों ने सैंकड़ों की संख्या में योगदान दिया। कुछ विदेशी भक्तों ने भी इस उत्सव में योगदान दिया था । अतिथियों के रहने के लिये जब मठ के कमरों की जगह पूरी न हुई तो दूधवाला, बागाड़िया और गोयन्का धर्मशालाओं को किराये पर लिया गया । भक्तों की संख्या जब और बढ़ गयी तो कुछ मकानों को किराये

पर लेकर अतिथियों के रहने की व्यवस्था हुई। श्रीमठ के सामने की ग्रान्ड रोड पर ही विराट सभामण्डप सजाया गया था जिसमें सन्ध्या के धर्म-सम्मेलन का उद्घाटन उड़ीसा हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश, श्री रंगनाथ मिश्र जी ने किया । सभापति के आसन पर विराजित हुये- कोलकाता हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश, श्रीविमल चन्द्र बसाक, सामन्त चन्द्रशेखर कालेज के अध्यक्ष, श्री त्रिलोचन मिश्र, श्रीधाम वृन्दावनस्थ प्राच्य दर्शनानुशीलन संस्था के प्रतिष्ठाता और अध्यक्ष, परमपूज्यपाद

परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डियति श्रीमद् भक्ति हृदय वन गोस्वामी महाराज, उड़ीसा की समाज-पत्रिका के सम्पादक, श्रीराधानाथ रथ एवं पुरी के जिलाधीश, श्री एस० एन० रथ | धर्मसभा के पहले, तीसरे व चौथे अधिवेशन में प्रधान अतिथि हुये थे- उड़ीसा के ख्यातनामा शिल्पपति, श्री वंशीधर पण्डा, कोलकाता के विशिष्ट एडवोकेट, श्री जयन्त कुमार मुखोपाध्याय और पुरी के विशिष्ट एडवोकेट, श्री नारायण मिश्र । धर्मसभा के पहले व तीसरे अधिवेशन में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे- पण्डित रघुनाथ

मिश्र एवं एडवोकेट, श्री रामदेव मिश्र । पाँचवें अधिवेशन में मुख्य वक्ता के रूप में भाषण प्रदान किया था उड़ीसा राज्य सरकार के भूतपूर्व खाद्य मन्त्री, श्रीगंगाधर महापात्र जी ने । श्रील गुरुदेव एवं परम पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति हृदय वन महाराज जी ने प्रतिदिन श्रोताओं को अपने दिव्य विचार प्रदान किये । इनके इलावा गुरु जी के गुरु-भाइयों ने भी विभिन्न दिनों में भाषण प्रदान किए। श्रील गुरुदेव जी के गुरु-भाइयों में से जिन्होंने अलग-अलग दिन भाषण प्रदान किया वे थे - परम पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति विचार

यायावर महाराज जी, परम पूज्यपाद, श्रीमद् भक्ति प्रमोद पुरी महाराज, परम पूज्यपाद भक्ति कुमुद सन्त महाराज, परम पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति कमल मधुसूदन महाराज, परम पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति सौरभ भक्तिसार महाराज, परम पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति विलास भारती महाराज व परम पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति विकास हृषीकेश महाराज । इसके अलावा गुरुवर्गों के निर्देशानुसार विभिन्न दिनों में जिन्होंने भाषण दिया, वे हैं- श्रीमठ के सम्पादक, श्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ महाराज, युग्म-

सम्पादक, श्रीमन् मंगल निलय ब्रह्मचारी, इस्कान प्रतिष्ठान के भुवनेश्वर शाखाकेन्द्र के डायरेक्टर- अमेरिकन भक्त, श्री भागवतदास ब्रह्मचारी और इस्कान प्रतिष्ठान के श्रीधाम वृन्दावन स्थित शाखाकेन्द्र के सदस्य, श्रीप्रद्युम्न दासाधिकारी ने।

'श्रीपुरुषोत्तमधाम में श्रीजगन्नाथ देव एवं श्रीचैतन्य महाप्रभु की उदारलीला', 'विश्व समस्या समाधान में सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद का पवित्र चरित्र और शिक्षा - वैशिष्ट्य', 'मनुष्य

सभ्यता की नींवईश्वर - विश्वास, 'कलियुग में भागवत धर्म' और 'श्रीहरिनाम संकीर्त्तन की सर्वोत्तमता'- यथाक्रम से सभा में वक्तव्य-विषय निर्धारित थे। श्रील गुरुदेव जी के त्यक्ताश्रमी सतीर्थ और शिष्यगणों में जिन्होंने योगदान किया था उनमें उल्लेखनीय योग्य थे- पूज्यपाद कृष्णदास बाबाजी महाराज, श्रीमद् रास बिहारी दास बाबा जी महाराज, श्रीमद् भक्ति श्रीरूप सज्जन महाराज, श्रीमद् इन्दुपति ब्रह्मचारी, श्रीमद् भक्ति प्रपन्न दण्डि महाराज, श्रीमद् भक्ति शरण त्रिविक्रम महाराज, श्रीमद्

जगमोहन ब्रह्मचारी, श्रीमद् भक्ति सुहृद बोधायन महाराज, श्रीमद् भक्ति प्रबोध मुनि महाराज, श्रीमद् भक्ति शरण शान्त महाराज, श्रीमद् भक्ति प्रापण दामोदर महाराज, श्रीमद् भक्ति प्रबोध परमार्थी महाराज, श्रीमद् कृष्ण केशव ब्रह्मचारी, डा० श्याम सुन्दर ब्रह्मचारी, श्री यति शेखर दासाधिकारी, श्रीमद् भक्ति प्रमोद वन महाराज, श्रीमद् भक्ति सुन्दर नारसिंह महाराज, श्रीमद् भक्ति भूषण भागवत महाराज, श्रीमद् भक्ति वैभव अरण्य महाराज, श्रीमद् भक्ति प्रकाश गोबिन्द महाराज,

श्रीमद् गिरिधारी दास बाबा जी महाराज व श्री विभु पद पण्डा जी।

श्रीसारस्वत गौड़ीय आसन और मिशन के अध्यक्ष, श्रील गुरुदेव जी के गुरु भाई, परम पूज्यपाद त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति श्रीरूप सिद्धान्ती महाराज जी ने इस विशाल उत्सव के अनुष्ठान के लिये अपने हृदय का उल्लास प्रकट किया तथा विभिन्न भावों से उत्साह प्रदान किया था।

27 फरवरी सोमवार प्रातः 7 बजे श्रीमठ से विशाल नगर-

संकीर्त्तनशोभायात्रा निकाली गई जिसने शहर के प्रधान-प्रधान मार्गों से परिभ्रमण किया । शोभायात्रा में काफी संख्या में त्रिदण्डि संन्यासियों के आ जाने से नर-नारियों में अभूतपूर्व उल्लास और उद्दीपना देखी गई।

28 फरवरी श्रीव्यास पूजा के दिन श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद जी के आविर्भाव स्थान पर श्रीव्यास पूजा, श्रीविग्रहों का महाभिषेक, पूजा-भोगरागादि, परम पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज जी के

पौरोहित्य में हरिसंकीर्त्तन के साथ सुसम्पन्न हुआ। अगणित वरनारियों के समावेश के कारण श्रील प्रभुपाद जी के आविर्भाव स्थल के सामने पुष्पांजलि देने के लिये स्थान का अभाव होने के कारण श्रील गुरुदेव जी की इच्छानुसार सभामण्डप में श्रील प्रभुपाद जी के सुसज्जित पूजा के आलेख पर केवल त्यक्ताश्रमी साधुओं और भक्तों ने क्रमानुसार पुष्पांजलि प्रदान की। प्रातः काल की धर्म सभा में पुष्पांजलि देने से पहले श्रील प्रभुपाद जी के दिव्य चरित्र के सम्बन्ध में परम पूज्यपाद श्रीमद्

भक्ति हृदय वन महाराज जी के हृदयग्राही सारगर्भित भाषण को सुनकर श्रोता लोग बड़े प्रभावित हुये। पुष्पांजलि देने के पश्चात् दोपहर में वहाँ एकत्रित अगणित नर-नारियों का विचित्र महाप्रसाद के द्वारा सम्मान किया गया।

1 मार्च दोपहर बाद 4 बजे श्रील गुरुदेव जी ने 'साधुनिवास' की एवं पटना हाईकोर्ट के भूतपूर्व न्यायाधीश, श्री हरिहर महापात्र ने 'संकीर्त्तन-भवन' की संकीर्त्तन के साथ नींव संस्थापन की पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति प्रमोद पुरी महाराज जी

के पौरोहित्य में एवं त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति सुहृद दामोदर महाराज जी की सहायता से वास्तुहोम और वैष्णवहोमादि कार्य सुसम्पन्न हुये।

श्रीलगुरुदेव